

## विचार बिन्दु

बेहतर यही होगा कि आप कोशिश करें शायद इसमें आप नाकामयाब हो जाएं और उससे कुछ सीखें बजाय इसके कि आप कुछ करें ही नहीं।

—मार्क जकरबर्ग

## डिजिटल प्रौद्योगिकी जीवन को सरल बनाते हुए बहुत कुछ छीनती भी है

तकनीकी प्रगति में कुछ भी सीधा-सरल नहीं होता। कोई भी नई प्रौद्योगिकी जो हमारे जीवन को आसान बनाने वाली चीजें लेकर आती है तो वह हम से बहुत सी चीजें छीन भी ले जाती है। यह इतना सहज से होता है कि हमें इसका तत्काल पता नहीं चल पाता। डिजिटल तथा अंतर्जाल (इंटरनेट) की प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन को जितना आसान बना दिया है उसकी पहले कभी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। डिजिटल तकनीक और इंटरनेट ने हमारी पहुंच को अकल्पनीय हद तक बढ़ा दिया है; हमारे लिए लिए सूचना के द्वार और मनोरंजन के नये वितान खोल दिए हैं। नई प्रौद्योगिकी से बनी आभासी दुनिया हमें मौजूद समय में आपस में जोड़ भी रही है। हम नई-नई खोजों का आनंद ले रहे हैं। बहुत से लोगों के लिए यह नयी डिजिटल व्यवस्था धन कमाने का जरिया भी बनी है। इससे हमने बहुत कुछ पाया है, मगर इसने हमसे बहुत सी चीजें छीन भी ली हैं जिसके लिए उपभ्रंश हो रही पीढ़ी अनेक बार नोस्टेल्जिक हो उठती है। जैसे, फोटो एलबम को ही लें जिनमें हम बड़े जतन से अपनी, अपने परिजनों व मित्रों की, पारिवारिक एवं अन्य समारोहों की श्वेत श्याम और फिर रंगीन फोटो चिपकाते थे। उन्हें एल्बम की शीट पर लगाने के लिए चिपकाने वाले कोनों का उपयोग करते थे। अब उन एल्बमों की जरूरत नहीं रही। अब डिजिटल स्टोरेज ने उन्हें हम से छीन लिया। अब फोटो खींचने वाले फ्लैश गैर पेशेवराना कैमरे भी नई डिजिटल तकनीक ने हम से छीन लिए हैं। अब कैमरे के अपरचर व टाइमर का हिस्सा भी नहीं सीखना पड़ता और न यह पता करने के लिए कि फ्लैश साफ आई है या नहीं फिल्म के धूल कर आने का इंजायर करना पड़ता है। नये डिजिटल कैमरे और स्मार्टफोन हमारे लिए सभी काम खुद ही कर लेते हैं। ली गई तस्वीरों को इंटरनेट पर उपलब्ध मुफ्त सुविधाओं से उन्हें न केवल सुधार ही सकते हैं बल्कि परिचितों से तुरंत साझा भी कर सकते हैं। कैमरे के ऑटो क्लिक को सेलफों ने छीन लिया है। सर्वे इंजिन 'गूगल' से पहले हम किसी किताब का पता करने तथा उसे खरीदने के लिए शहर की किताबों की दुकानों के चक्कर लगाते थे और दुकानदारों की मिसलें करते थे कि अमुक किताब वह हमारे लिए मंगवा दे। नेट ने यह काम उनसे छीन कर अमेज़न और प्रकाशकों की वेब साइटों को दे दिया है। किताबें ही क्यों अन्य सामान, यहां तक कि भोजन की थाली भी, ऑनलाइन ऑर्डर दे कर मंगा सकने के नये जमाने में पुरानी चीजों का खो जाना किसी को अखरता नहीं। अब हम शहर के बाज़ार की जगह अधिकतर इंस्टाग्राम पर मौजूद खिड़कियों में विंडो शॉपिंग करते हैं, जहां लक्षित विज्ञापन होते हैं और जिनके प्रायोजक जानते हैं कि हमारी रुचियां क्या हैं। नई तकनीक ने विंडो शॉपिंग के आश्चर्य और लालसा के भाव और दुकान के अंदर की मनोरम झलक पाने का आनंद छीन लिया है। जब हम स्कूल या कॉलेज में पढ़ते थे तब हमारे लिए जो सबसे महत्वपूर्ण चीज होती थी वह थी डिक्शनरी। पढ़ाकूओं के पास अंग्रेजी से अंग्रेजी, अंग्रेजी से हिन्दी और हिन्दी से हिन्दी की तीन-तीन डिक्शनरियां होती थीं। अंग्रेजी की कैम्ब्रिज और ऑक्सफोर्ड दोनों डिक्शनरियां घर में होनी लाजमी थीं। अंग्रेजी से हिन्दी के लिए फादर कामिल बुल्के और हिन्दी की भाषाव की डिक्शनरियों का अपना रुतबा हुआ करता था। इंटरनेट ने हमारे बचपन और किशोर वय की साथी रही उन डिक्शनरियों को हमसे छीन लिया। ऐसे ही 12 खंडों वाले एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका में कुछ खोजने के लिए कॉलेज की लाइब्रेरी जाना होता था क्योंकि यह भारी भरकम कोश खरीदना हर एक के बूते की बात नहीं होती थी। थोड़े ऊंचे पढ़ाकू थैसार्स रख कर गर्व अनुभव करते थे। अब उनके लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं होती, सभी

हमारे दैनिक अस्तित्व पर इंटरनेट ने कैसा प्रभाव डाला है इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि सुबह आंख खुलते ही सबसे पहला काम स्मार्टफोन की स्क्रीन पर टैप करना तो अब लोगों की आदत बन चला है। हम ऑनलाइन दुनिया में अधिक से अधिक समय बिताने लगे हैं। इंटरनेट से पहले का जीवन अब गुदगुदाती सुखद स्मृति बन कर रह गया है जिसे वापस नहीं पाया जा सकता।

एरियल लगा कर रेडियो सेट पर बड़ी सावधानी से ट्यून करके शॉर्टवेव पर रेडियो सिलोन, बीबीसी या दूर दराज के दूसरे देशों के प्रसारण सुनते थे। इंटरनेट ने इन सब को छीनते हुए उनके विकल्प स्मार्टफोन में दे दिए हैं। रेडियो के समाचारों से घड़ियां मिलाना भी हमसे छिन गया है। कुछ भी हो जाए आकाशवाणी पर समाचार ठीक निर्धारित क्षण पर शुरू होते थे न एक सेकेंड आगे न एक सेकेंड पीछे। रेडियो से घड़ी मिलाने का आनंद हमसे छिन गया। अब तो इंटरनेट से जुड़े स्मार्टफोन अपनी घड़ी अंतर्राष्ट्रीय और स्थानीय समय के अनुसार अपने आप सेट कर लेते हैं। नेट पर ही अब सारे रेडियो तथा टीवी स्टेशन मौजूद हैं जिनका जीवंत प्रसारण इंटरनेट की बढौलत डिजिटल दुनिया में उपलब्ध है। गते के कागज पर छपा रेल का छोटा सा टिकट यात्रा पूरी होने तक अब जेब में संभाल कर रखने का अनुभव हमसे छिन गया है। उसे खरीदने के लिए रेलवे स्टेशन जाकर लंबी लाइन में लगना अब पुरानी बात हो गई है। इंटरनेट पर ऑनलाइन खरीदा गया टिकट हमारे फोन में रहता है और उसे स्क्रीन पर ही टाई की जरूरत पड़ने पर दिखाया जा सकता है। इंटरनेट निर्बिबाद रूप से एक प्रकार का जादू है, मगर उसने हमारे जीवन के कुछ पुराने जादू पर पोंछा फेर दिया है। हमारे दैनिक अस्तित्व पर इंटरनेट ने कैसा प्रभाव डाला है इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि सुबह आंख खुलते ही सबसे पहला काम स्मार्टफोन की स्क्रीन पर टैप करना तो अब लोगों की आदत बन चला है। हम ऑनलाइन दुनिया में अधिक से अधिक समय बिताने लगे हैं। इंटरनेट से पहले का जीवन अब गुदगुदाती सुखद स्मृति बन कर रह गया है जिसे वापस नहीं पाया जा सकता।

अब हमें कहीं पहुँचने के लिए किसी से रास्ता पूछने की जरूरत नहीं रही। कभी वे ड्राइवर अधिक सफल होते थे जिन्हें शहर के रास्ते हाथ की हथेली की तरह मालूम होते थे। अब उनकी जरूरत नहीं रही है। अब हम गूगल मैप से अपने गंतव्य तक पहुँचते हैं। टैक्सी वाले, जो अब कैब वाले कहलाते हैं, भी आपसे पता पूछ कर इंटरनेट से जुड़े अपने स्मार्टफोन में फ्रीड करते हैं और गूगल के निर्देशों के अनुसार रास्ता चुनते हैं और गंतव्य तक पहुँचते हैं। टैक्सी बुलाने के लिए भी उसी फोन का इस्तेमाल होता है जो हमारे हाथ में होता है। वास्तव में वह हमारी हथेली में पूरा कंप्यूटर है। इस पर छोटे संदेश या बड़े आलेख लिख कर भेज सकते हैं। इससे भी आगे बढ़ कर दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति से रीयल टाइम में संदेशों का आदान-प्रदान ही नहीं कर सकते हैं बल्कि वीडियो चैट भी जब चाहें कर सकते हैं। फोन तो हम पहले ही करते थे और उस पर लंबी-लंबी बातें भी होती थी। अपने बचपन को याद कीजिए जब वह उलाहना सुनते थे कि अरे वह तो एक घंटे से फोन पर ही चिपका या चिपकी हुई बैठी है। अब जब कोई फोन पर गेम खेलने में व्यस्त हो तो तब भी कोई ऐसी शिकायत नहीं करता। अब तो किसी को फोन करने से पहले भी संदेश भेज कर पूछा जाता है कि क्या मैं आपको कॉल कर सकता हूँ? यह नये शिष्टाचार ने पुराने बेतकल्लुफ शिष्टाचार को छीन लिया है। अनौपचारिक रिश्ते हम से छिन गए हैं। इंटरनेट के इस युग में क्या हममें से किसी को सचमुच दूसरों के जन्मदिन याद रहते हैं? यदि नजदीकी रिश्तेदारों या प्रतिदिन ऑफिस में बगल में बैठने वालों के जन्मदिन कोई हम से पूछ ले तो हम बगलें झंकाते लगते हैं। इन तारीखों तथा फोन नंबरों को सलीके से लिखी छोटी डायरियां हमसे छिन गई हैं। चिंता किस बात की; इंटरनेट मौजूद है ना। जन्मदिन की शुभकामनाएं देने के लिए इमोजी के साथ इंटरनेट पूरी तरह तैयार रहता है। मगर जो इंटरनेट पर नहीं है उनका क्या? इंटरनेट का एक विरोधाभास यह है कि जहां इतने जितने दुनिया को हमारे लिए खोल दिया है, वहीं इसने उस दुनिया को छोटा भी महसूस कराया है। हम नदी, पहाड़, बागानों तथा स्मारकों के शानदार दृश्य असल में नहीं डिस्कटॉप पृष्ठभूमि में देखते हैं। ऑनलाइन सर्फिंग में कुछ घंटे बिताने के बाद हम दुनिया छोटी, दोहरावदार और सपाट दिखने लगती है। शायद हम अपना बोरडम मिटाने के लिए स्मार्टफोन पर उंगलियां फिराते हैं। पहले लोग जीवन के उबाऊ पलों को सहज स्वीकार करते थे। भाषा विज्ञानी बताते हैं कि 'बोरडम' शब्द आशिक रूप से उन्नीसवीं सदी के मध्य तक सामने नहीं आया था। घर में मन नहीं लगा तो हम अवकाश में खाली फुटपाथों पर या आबादी से दूर लक्ष्यहीन सैर पर चले जाते थे। मोबाइल फोन और डिजिटल डाटा ने हमसे यह आनंद भी छीन लिया है।

—अतिथि संपादक,  
राजेन्द्र बोड़ा  
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

## मानपुरा का 60 साल का दिव्यांग सरकार की मदद से वंचित

बुजुर्ग दिव्यांग के चलने-फिरने के लिए बिना पैडल, हैंडल व ब्रेक वाली व्हील चेयर बनी सहारा

माण्डलगढ़, (निसं)। मांडलगढ़ के मानपुरा गांव में एक 60 साल के दिव्यांग बुजुर्ग की अनदेखी सरकारी सिस्टम के जिम्मेदारों पर कई सवाल खड़े कर रही है। सरकार ने भले की दिव्यांगजन के उत्थान के लिए कई योजनाएं शुरू कर रखी हैं, लेकिन जिम्मेदारों की नजरें इस दिव्यांग बुजुर्ग पर आज तक नहीं पड़ी है।

माण्डलगढ़ उपखण्ड के मानपुरा गांव में रहने वाले सत्यनारायण पारीक का एक पैर एक दशक पहले किसी हादसे में कट गया था, जिससे वह दिव्यांग हो गया। घर की माली हालत बहुत दयनीय और शारीरिक कमजोरी के चलते कोई काम-धंधा भी नहीं कर सकता। इस बुजुर्ग दिव्यांग ने घर से बाहर घूमने-फिरने के लिए रोगी व्हील चेयर का जुगाड़ कर रखा है, लेकिन चिलचिलाती धूप में इस व्हील चेयर को सड़क पर चलाने में कड़ी दिक्कतों का



माण्डलगढ़ उपखण्ड के मानपुरा गांव का रहने वाला दिव्यांग सत्यनारायण पारीक।

सामना करना पड़ रहा है। वहीं है। व्हील चेयर में न पैडल है और हादसा होने की आशंका बनी रहती न ही ब्रेक है।

दिव्यांग सत्यनारायण पारीक ने बताया कि घर में एक बेटा है जिसके

■ मानपुरा गांव के सत्यनारायण पारीक का एक पैर एक दशक पहले किसी हादसे में कट गया था

■ बुजुर्ग दिव्यांग ने घर से बाहर घूमने-फिरने के लिए रोगी व्हील चेयर का जुगाड़ कर रखा है

पस भी काम-धंधा पर्याप्त नहीं है और पत्नी भी बुजुर्ग है। गांव के लोग ही सहायता करते आ रहे हैं, कई बार जिम्मेदार अधिकारियों और जन प्रतिनिधियों को सरकारी सहायता के लिए गुहार लगाई, लेकिन किसी ने अब तक सुध नहीं ली है।

## आठ माह की बालिका की डाम लगाने से हालत बिगड़ी, अस्पताल में भर्ती

भीलवाड़ा, (निसं)। अंधविश्वास के नाम पर मासुमी की जिंदगी से खिलवाड़ का खेल थमने का नाम नहीं ले रहा है। एक आठ माह की बालिका की डाम लगाने से हालत बिगड़ने के बाद परिजनों ने उसे एमजी अस्पताल के मातृ एवं शिशु चिकित्सालय में भर्ती करवाया है। एक और जहां परिजन डाम से इनकार कर रहे हैं, वहीं डॉक्टर इसे डाम लगाने से हालत बिगड़ने का मामला बता रहे हैं। फिलहाल अस्पताल में बच्ची का उपचार किया जा रहा है।

एमजी चौकी पुलिस के अनुसार, चित्तौड़गढ़ जिले के गंगरार थाना इलाके की 8 माह की बच्ची रीना पिता हेमराज भील को मंगलवार सुबह यहां मातृ एवं शिशु चिकित्सालय में भर्ती करवाया गया। डॉक्टरों ने बच्ची का स्वास्थ्य



बच्ची को उपचार के लिये भीलवाड़ा के एमजी अस्पताल के मातृ एवं शिशु चिकित्सालय में भर्ती करवाया है।

■ परिजन डाम से इनकार कर रहे हैं, वहीं डॉक्टर इसे डाम लगाने से हालत बिगड़ने का मामला बता रहे हैं।

परीक्षण किया तो उसके चेस्ट पर डाम लगा हुआ मिला। डॉक्टरों ने अस्पताल चौकी पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने परिजनों से घटना की जानकारी चाही तो उन्होंने बताया कि उनकी बच्ची बीमार है, इसलिए उसे यहां भर्ती करवाया है। परिजनों ने बच्ची को डाम लगाने और लगाने से इनकार किया है। स्थिति जांच के बाद ही साफ हो पायेगी। फिलहाल बच्ची का उपचार जारी है और उसकी हालत गम्भीर बनी हुई है।

## देवयानी तीर्थ स्थल पर बने सुलभ शौचालय की हो रही दुर्दशा

20 लाख रुपए की लागत से निर्मित सुलभ शौचालय करीब छह माह से सफाई को तरस रहा है

सांभरझील, (निसं)। देवयानी तीर्थ स्थल पर आने वाले सैकड़ों श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए 20 लाख रुपए की लागत से निर्मित अतिआधुनिक सुलभ शौचालय करीब छह माह से सफाई को तरस रहा है। नगर पालिका प्रशासन के माध्यम से बनवाए गए सुलभ शौचालय की नियमित सफाई तो दूर यहां मिलने वाली सुविधाएं भी गायब हैं। छत पर रखी तीन पानी की टंकियां तीन रोज पहले आई आंधी के कारण उड़कर नीचे पड़ी हैं। टंकियों में पानी नहीं भरने के कारण सुलभ शौचालय अनुपयोगी साबित हो रहा है। वाशवश में सीमेंट के खाली प्लास्टिक के कट्टे भरते पड़े हैं। शौचालय सड़ांध मार रहे हैं। यहां आने वाली महिलाओं को टॉयलेट के लिए इधर-उधर भटकना पड़ता है। शौचालय की दीवार पर लगा टाइल्स कई जगहों से उखड़ कर गिर गई हैं।

यहां के पुजारियों ने बताया कि पालिका प्रशासन की ओर से टंकियों में पानी भरने के लिए करीब 10 हजार लीटर क्षमता का होद भी बनवाया हुआ है लेकिन आज तक उसे भरना तो दूर टंकियों में पानी चढ़ाने के लिए ना तो मोटर है और



देवयानी तीर्थ स्थल पर सुलभ शौचालय की दुर्दशा हो रही है।

न ही कोई कनेक्शन किया हुआ है। यह भी बताया जा रहा है कि यहां के शौचालय के लिए पानी के लिए तीन

टैंकर स्वीकृत है लेकिन उनकी खानापूर्ति कामगो में की जाती है। पर्यटन महोत्सव के दौरान इन

टंकियों को टैंकर से पाइप जोड़कर भरा गया था, जबकि होद में पानी भरकर कनेक्शन जोड़कर इन

■ 10 हजार लीटर क्षमता का पानी का होद आज तक रीता पड़ा है

■ टंकियों में पानी चढ़ाने के लिए आज तक नहीं हुआ कनेक्शन

■ देवयानी तीर्थ स्थल पर 23 मई को भरेगा वार्षिक मेला

टंकियों को भरने का काम कामगो में तो दिखा रखा है लेकिन धरातल पर सब कुछ उट्टा है। सुलभ शौचालय में कुल 12 संडास बने हुए हैं, सफाई नहीं होने के कारण भयंकर गंदगी जमा है और अब अंदर कोई जाने की स्थिति में नहीं है। पुरुष मृत्शालय में बेकार का सामान भरा पड़ा है जिसे हटाने के लिए स्थानीय प्रशासन मुकदशक बना हुआ है। 23 मई को देवयानी तीर्थ स्थल पर वार्षिक मेले का आयोजन होगा। इस दौरान हजारों श्रद्धालु यहां तीर्थ स्थल पर आते हैं ऐसी स्थिति में समय रहते सुलभ शौचालय की सुध लिए जाने की दरकार है।

### राशिफल

बुधवार 15 मई, 2024

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत् 2081, आश्लेषा नक्षत्र दिन 3:25 तक, वृद्धि योग प्रातः 7:41 तक, विधि करण सांय 5:21 तक, चन्द्रमा आज दिन 3:25 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेघ, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मीन, बुध-मेघ, गुरु-वृष, शुक-मेघ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में। आज भद्रा सांय 5:21 तक रहेगी। आज दुर्गाष्टमी, बुधाष्टमी, देवी बगला मुखी जयन्ती है। श्रेष्ठ चौघडिया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:03 तक, शुभ 10:43 से 11:23 तक, चर 3:43 से 5:23 तक, लाभ 5:23 से सूर्यास्त तक। राहुकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:43, सूर्यास्त 7:03

**मेघ**  
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

**तुला**  
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लगेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**वृष**  
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभीथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लगेगी। नौकरपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होगा।

**वृश्चिक**  
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आशासन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बने लगेगी। व्यावसायिक कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।

**मिथुन**  
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें। नौकरपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। दिन के खाली प्लास्टिक के कट्टे भरते पड़े हैं। शौचालय सड़ांध मार रहे हैं। यहां आने वाली महिलाओं को टॉयलेट के लिए इधर-उधर भटकना पड़ता है। शौचालय की दीवार पर लगा टाइल्स कई जगहों से उखड़ कर गिर गई हैं।

**धनु**  
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बतने कार्य बिगड़ सकते हैं। दिन के मध्याह्न पश्चात शुभ संदेश प्राप्त होगा।

**कर्क**  
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आशासन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बने लगेगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**मकर**  
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**सिंह**  
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनर्गल कार्यों में समय जाने की स्थिति में नहीं है। पुरुष मृत्शालय में बेकार का सामान भरा पड़ा है जिसे हटाने के लिए स्थानीय प्रशासन मुकदशक बना हुआ है। 23 मई को देवयानी तीर्थ स्थल पर वार्षिक मेले का आयोजन होगा। इस दौरान हजारों श्रद्धालु यहां तीर्थ स्थल पर आते हैं ऐसी स्थिति में समय रहते सुलभ शौचालय की सुध लिए जाने की दरकार है।

**कुंभ**  
स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटक हुए कार्य बने लगेगी। दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

**कन्या**  
आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्याह्न पश्चात आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें अभी थावत बनी रहेगी।

**मीन**  
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक चर्चा सफल रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



पंडित अनिल शर्मा